M.A-II SEMESTER CC-5 01

प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

इकाई (3) चरित काव्य

Q1. रयणचूडरायचरियं के कवि परिचय एवं संक्षेप मे कथावस्तु प्रस्तुत करें।

Ans- कवि का परिचय - रयणचूडरायचरियं काव्य के रचयिता चन्द्रकुल के बृहद्गच्छीय उद्योतन सूरि के प्रशिष्य और आम्रदेव के शिष्य नेमिचन्द्र सूरि है। आचार्य पद प्राप्त करने के पहले इनका नाम देवेन्द्रगणि था ये मुनिचन्द्र सूरि के धर्म सहोदर थे। इस गच्छ में प्रद्युम्न सूरि, मानदेवसूरि सुप्रसिद्ध देव सूरि, उद्योतन सूरि तथा आम्रदेव उपाध्याय हुए है। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना कि जिसमें उत्तराध्ययन की सुखबोधा टीका तथा महावीरचरियं ग्रन्थ की रचना की है।

रयणचूडरायचरियं के कथावस्तु - इस चरित काव्य की कथावस्तु को तीन भागों मे विभक्त किया गया है। (1) रत्नचूड का पूर्वभव (2) जन्म, हाथी को वश करने के लिए जाना, तिलकसुन्दरी के साथ विवाह और (3) रत्नचूड का सपरिवार मेरु गमन और देशव्रत स्वीकृति।

कथा के प्रथम खण्ड में बताया गया है कि कंचनपुर में वकुल नाम का माली रहता था यह अपनी भार्या पद्मिनी सहित जिन जन्ममहोत्सव के पुष्प विक्रय के लिये ऋषभदेव के मन्दिर में गया और वहाँ लक्ष्मीमति पुष्पों से जिन सेवा करने की इच्छा उसके मन में

जाग्रत हुई। उसने एक महीने में अपनी इच्छा पूरी की और जिन पूजन भक्ति के प्रसाद से रत्नपुर में कमल सेना रानी के गर्भ से रत्नचूड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

रत्नचूड ने बचपन में विद्या और कला ग्रहण करने में खूब परिश्रम किया। पूर्व जन्म के शुभ संस्कारों के कारण उसने अश्वबन्धन, मोचन प्रभृति एवं हस्ति संचालन, हस्तिवशीकरण आदि कलाओं में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त किया। एक दिन राजसभा में एक शबर ने एक अपूर्व हाथी के वन में आने का समाचार सुनाया, इसे सुनकर रत्नचूड उस हाथी को वश में करने के लिए वन को चल पड़ा। रत्नचूड ने अपनी अद्भुत कला से उस हाथी को वश में कर लिया और वह उसके ऊपर सवार हो गया। हाथी रत्नचूड को लेकर भाग। राजा की सेना ने उसका पीछा किया, पर हाथी का उसे पता न लगा। हाथी अत्यन्त दूर घने अरण्य में पहुँचा और वहाँ एक सरोवर में कमल पर आरूढ़ एक तपस्वी के दर्शन किये। तपस्वी के अनुरोध से कुमार रत्नचूड आश्रम में गया और वहाँ उसने एक सुन्दरी राजकन्या को देखा। तपस्वी के मुख से कन्या का परिचय सुनकर कुमार रत्नचूड बहुत प्रसन्न हुआ एवं प्रदत्त आकाशगामिनी विद्या द्वारा विद्याधर से तिलकसुन्दरी को मुक्त किया। पश्चात् अद्भुत रूपलावण्यवाली तिलकसुन्दरी के साथ कुमार रत्नचूड का विवाह सम्पन्न हो गया। तिलकसुन्दरी का विद्याधर अपहरण कर लेता है। वह पति से वियुक्त होने के कारण नाना प्रकार से शोक करती है। रत्नचूड तिलकसुन्दरी की तलाश करता हुआ रिष्टपुर में आता है। उसे रिष्टपुर नगर का राजभवन शून्य मिलता है और वहाँ राजकुमारी सुरानन्दा की रक्षा करता हुआ यक्ष मिलता है। अनन्तर सुरानन्दा के साथ रत्नचूड का विवाह

सम्पन्न हो जाता है। रत्नचूड अनेक विद्याधरों से मिलता है और उसके अन्य भी कई विवाह होते हैं। राज्यश्री के साथ विवाह कार्य हो जाने पर उसे महान् राज्य प्राप्त होता है। मदन केशरी का पराजय कर रत्नचूड तिलकसुन्दरी को पुनः प्राप्त कर लेता है। तिलकसुन्दरी अपनी शील रक्षा का समस्त वृत्तान्त सुनाती है। समस्त सुन्दरियों के साथ कुमार रत्नचूड नन्दिपुर में तिलकसुन्दरी के माता-पिता तथा गजपुर में अपने माता-पिता से मिलता है।

कथावस्तु के तीसरे खण्ड में रत्नचूड सपरिवार मेरुपर्वत की यात्रा करता है और वहाँ सुरप्रभ मुनि के दर्शन कर उनका धर्मोपदेश सुनता है। मुनिराज दानधर्म की महत्व बतलाते हैं तथा राजश्री के पूर्वभवों का वर्णन करते हैं, जिससे राजश्री को जातिस्मरण हो जाता है। शील का माहात्म्य बतलाने के लिए पद्मश्री के पूर्वभव, तपगुण का माहात्म्य बतलाने के लिए राज-हंसी के पूर्वभव का तथा भावनाधर्म का महत्व बतलाने के लिए सुरानन्दा के पूर्वभव का वर्णन करते हैं। कुमार रत्नचूड तथा उसकी सभी रानियाँ अपने अपने पूर्वभव का वृत्तान्त अवगत कर विरक्त हो जाती हैं। कुमार रत्नचूड देशव्रत स्वीकार कर लेता है। धर्माराधना के फल से कुमार अच्युत स्वर्ग में देवपद प्राप्त करता है और वहाँ से च्युत हो महाविदेह से मोक्षलाभ करता है।

इस प्रकार रत्नचूड चरित्र का कथावस्तु रहा है।